मुगलकाल मे हिंदी

डा. बीना माथुर (एसो सएट प्रौफेसर)
ए. के. पी. (पी. जी.) कालेज, खुर्जा , बुलंदशहर , उ. प्र.

अध्ययन की दृष्टि से हिंदी भाषा के वकास को तीन भागों मे वभाजित कया गया है- आदिकाल, मध्यकाल, और आधुनिक काल। आदिकाल मे हिंदी भाषा के तीन रूप दिखाई पड़ते है-अपभ्रंशाभास, पंगल , डंगल। 1206 ई. मे मुस्लिम आक्रंताओं ने भारत पर अ धकार कर दिल्ली सल्तनत की स्थापना की। उत्तर भारत मे इस्ला मक शासन की स्थापना के बाद यहां के मूल निवा सयों की सामाजिक और साहित्यिक प्रगति मंद हो गई। राजदरबार की भाषा फारसी थी इसी लए क्षेत्रिय भाषाओं को राजकीय प्रश्रय प्राप्त नही हुआ। वद्वानों ने 1375 व.सं. से 1700 व.सं. को भक्ति काल माना है। जार्ज ग्रयर्सन ने इस काल को हिंदी साहित्य का स्वर्ण काल कहा है कन्तु वह कहते है ककोई भी भक्तिकाल के प्रादुर्भाव का काल निश्चित नहीं कर सकता।[1] इस युग तक हिंदी की तीन स्पष्ट बो लयां वक सत हो गई थी ब्रज भाषा ,अव ध और खड़ी बोली। खड़ी बोली पर अवधी या ब्रजभाषा का प्रभाव दिखाई नही देता है।खड़ी बोली मे संस्कृत के शब्दों की बहुलता करके ही हिंदी भाषा का उद्भव हुआ प्रतीत होता है। डा. सुनीति कुमार चटर्जी खड़ी बोली के साहित्यिक रूप को नागरी हिंदी कहते है। कृष्ण मार्गी क वयों ने हिंदी की ब्रजभाषा को गोर्वां वत कया। अमीर खुसरो ने इसी समय फारसी-हिंदी शब्दकोष की रचना की।[2]खुसरो की लोकोक्तियां, पहे लयां, मुकरियां वर्तमान मे भी अत्यंत प्र सध्द है। सल्तनत काल के क वयों मे नामदेव, रामानन्द, गुरूनानक, कबीर, आदि के नाम प्रमुखता से लए जाते है।इन क वयों की भाषा म श्रत है कन्तु इनका अध्ययन हिन्दी साहित्य मे ही कया जाता है।[3]

1526 ई. मे मुगल बादशाह बाबर ने पानीपत के मैदान मे दिल्ली के शासक इब्राहिम लोधी को परास्त कर भारत मे मुगल साम्राज्य की नींव रखी।यही से हिंदी की प्रगति का युग आरंभ होता है ।मुगलों की मातृ भाषा तुर्की थी ।उनकी दरबारी भाषा फारसी और अरबी थी। फर भी मुगल बादशाहों ने हिंदी मे क वताएँ लखी ।जिन बादशाहों ने नहीं लखा वह भी हिंदी को सम्मान देने से पीछे नही थे। चंद्रबली पांडे बाबर के दरबार मे सुनाये गये दोहे का जिक्र करते है –

नौ सौ ऊपर था बतीसा,पानीपत मे भारत दीसा ।
अठई रज्जब सुक्करवारा, बाबर जीता वराहीम हारा ।

मुगलकाल मे वास्तुकला,संगीतकला, शल्पकला, चत्रकला, नृत्यकला,आदि कला की सभी वधाओं के साथ फारसी ,उर्दू, तथा हिंदी आदि भाषाओं के साहित्य का भी वकास हुआ।[4]बाबर कला, और प्रकृति प्रेमी था। बाबर की आत्मकथा बाबरनामा मे कुछ रूबाईयां मलती है।[5] हरवंश मु खया के अनुसार अगर बाबर भारत न आता तो भारतीय संस्कृति के इन्द्रधनुश के रंग फीके रहते ।

चंद्रबली पाण्डे लखते है क हुमायूँ के दरबार मे फारसी भाषा के कुछ ऐसे क व थे जो हिंदी मे भी गीतों की रचना करते थे ।वे क व अब्दुल वाहिद बिलग्रामी और शेख गदाई देहलवी थे।उसके दरबार मे क्षेम नामक हिंदी का क व भी था।[6]

अकबर के शासन को हिंदी के उत्थान का स्वर्ण-युग कहा जा सकता है। राहुल सांकृत्यायन के अनुसार –अशोक के बाद देश मे दूसरा ध्रुवतारा अकबर ही दिखाई पड़ता है।अकबर प्रथम मुगल शासक था जिसने मुसलमानों के साथ

हिंदुओं को भी भाषा और अ भव्यक्ति की स्तंत्रता प्रदान की थी। के. टी. शाह कहते है क अकबर ने हिंदू और मुसलमान दोनों जातियों को राष्ट्रीयता के सूत्र मे परोया।[7] इस काल मे हिंदी की अवधी भाषा का ठेठ ग्रामीण रूप तथा तत्सममुखी रूप दिखाई देता है। म लक मुहम्मद जायसी ने 1540 ई. के लगभग अपनी प्र सध्द पुस्तक पद्मावत लखी जिसमे एक रूपक के रूप मे मेवाड़ की रानी पद्मिनी की ऐतिहा सक कहानी है। इसमे हिंदी की अवधी बोली का ठेठ ग्रामीण रूप दिखाई पड़ता है। इस काल मे उच्च कोटि के रचनाकारों मे तुलसीदास, सूरदास, अब्दुर्रहीम खानखाना, रसखान, आदि प्रमुख थे। तुलसीदास ने रामचरित मानस की रचना वैसवाड़ी अवधी मे की (अवधी का तत्सममुखी रूप)।

राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुध्दि निधान।
आ सष देई गई सो हर ष चलेऊ हनुमान ।।

तुलसीदास ने अवधी भाषा को साहित्यिक ऊँचाई पर पहुंचा दिया।तुलसीदास की अन्य रचनाओं मे- वनयपत्रिका ,क वतावली, जानकी मंगल, दोहावली, पार्वती मंगल, गीतावली, वरवै रामायण आदि है। सूरदास की रचनाओं मे- सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी, नल-दमयन्ती, ब्याहलो आदि प्रमुख है।श्री कृष्णजी के अनन्य उपासक तथा ब्रजभाषा के श्रेष्ट क व महात्मा सूरदास हिंदी साहित्य के सूर्य माने जाते है।[8]बालक कीचपलता,स्पर्धा, अ भलाषा, आकांक्षा का वर्णन करते हुए सूरदास लखते है-

मैया कबहिं बढ़ैगी चौटी ,
कती बार मोहिं दूध पयत भई,यह अजहूँ है छोटी।

रसखान की रचनाओं मे श्रृंगार और भक्ति की प्रधानता के कारण ही उन्हे रस की खान कहा गया है।उनकी प्रमुख रचनाओं मे सुजान रसखान, और प्रेमवाटिका है। सुजान रसखान, क वत्त और सवैया छन्दों से युक्त है –मानुस हौं तो वही रसखान बसौं म ल गोकुल गाँव के ग्वारन

प्रेमवाटिका मे उन्होने दोहा छन्द का प्रयोग कया गया है।इन्होने परंपरागत पद्य शैली का परित्याग कर मुक्तक छन्द शैली को अपनाया है जो रीतिकाल तक दिखाई देती है।रहीम तलवार और कलम दोनो वघ्याओं मे पारंगत थे। अकबर के समय मे प्रधान सेनानायक और मंत्री थे और अनेक बड़े बड़े युध्दो मे भेजे गए थे।[9] रहीम ने अपनी रचनाओं मे अवधी , ब्रज औरखड़ी बोली का प्रयोग कया है। रहीम ने बरवै अवधी मे लखे , दोहे सोरठे तथा क वत्त सवैये ब्रजभाषा ,मे लखे तथा मदनास्टक मे खड़ी बोली का प्रयोग कया है-

क लत ल लत माला या जवाहिर जड़ा था।
चपल चखन वाला चाँदनी मे खड़ा था।।

उसने रहीम सतसई, श्रृंगार सतसई, रहीम रत्नावली, बरवै नायिका भेद आदि ग्रंथ लखे। अकबर के दरबारी क वयों मे बीरबल, भगवानदास, मान संह, टोडरमल, आदि सभी सेनानायक होने के साथ साथ अच्छे क व भी थे। बीरबल बादशाह का दरबारी क व था जिसे अकबर ने क वराज की उपा ध से वभु षत कया था। अकबर स्वयं भी क वताएं कया करता था।हिंदी मे भी उसने बहुरंगी अनोखे ढंग की क वताएं लखीं है जो काव्यकला का बेजोड़ उदाहरण है।[10] जहांगीर के शासन मे रीति –ग्रंथों का निर्माण कार्य आरंभ हुआ तथा द्वन्द,शब्दशक्ति, अलंकार, रस, आदि वषयों पर अनेक क वयों ने ग्रंथों की रचना की। उसके दरबार मे केशवदास ,मतिराम, चंतामणी ,देव, पद्माकर,महाराजा जसवंत संह आदि वद्वानों ने हिंदी ग्रंथों की रचना की। केशवदास ने क व प्रया, रामचन्द्रिका,र सक प्रया वज्ञान गीता, जहांगीर जसचंद्रिका आदि ग्रंथों की रचना करके हिंदी के उत्थान मे योगदान कया। शाहजहां के शासन काल मे ग्वा लयर के सुन्दर नामक क व को शाहजहां ने राजक व तथा महाक व की उपा ध से वभू षत कया था। रीति के

ऊपर उसने सुन्दर सागर नामक ग्रंथ लखा। इसी काल मे सेनापति ने काव्य कल्पद्रुम, क वत रतनाकर, तथा बिहारी ने बिहारी सतसई की रचना की ।

1658 ई. मे औरंगजेब मुगल बादशाह बना । उसकी हिंदू वरोधी नीति ने हिंदी और हिंदी साहित्य को बहुत क्षति पहुंचाई। कुछ प्रादे शक राजाओं ने हिंदी को आश्रय प्रदान कया। इस काल मे भूषण, मतिराम हिंदी के श्रेष्ठ क व हुए। भूषण क्षत्रपति शवाजी के मत्र और दरबारी क व थे। भूषण की रचना वीर रस पर आधारित है जब क मतिराम ने अलंकार पर आधारित ग्रंथों की रचना की। मोहता नैणसी के ख्यात, खुमान रासो ,राणा रासो आदि साहित्य इसी काल मे लखा गया।

अत: हम कह सकते है क मुगल काल मे वास्तुकला ,मूर्तिकला,संगीतकला, नृत्यकला, चत्रकला आदि पर हिंदवी और मुस्लिम दोनो कला शै लयों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।इसी प्रकार फारसी और संस्कृत भाषाओं के सम्मिश्रण से एक तीसरी जन भाषा हिंदी उत्पन्न हो गई। खड़ी बोली मे संस्कृत भाषा के शब्दों के अ धक प्रयोग ने हिंदी को जन्म दिया तथा खड़ी बोली मे फारसी भाषा के शब्दों की अ धकता ने उर्दू को जन्म दिया। मुगलकालीन भारतीय समाज मे दो प्रकार का चरित्र वध्यमान था- प्रथम बादशाह ,दरबारी ,और सामंतों का भोग वलास युक्त चरित्र तथा दूसरा जन-साधारण का उच्च नैतिक गुणों से युक्त चरित्र । इसी लए इस काल मे हिंदी के क्षेत्र मे दो प्रकार का साहित्य स्पष्टत: दृष्टिगोचर होता है। भक्तिकालीन साहित्य इसकाआधार अपने अराध्य देव को प्राप्त करने के लये प्रेम, भक्ति और नैतिक आदर्शों के मार्ग पर चलना , तथा रीतिकालीन साहित्य अलंकारों, रसों, नायिका भेदों, शब्द शक्तियों, ध्वनि भेदों,को आधार बनाकर लखा गया। मुगलकाल मे नागरी हिंदी अंकुरित,पल्ल वत ,और पुष्पित हुई।

संदर्भ

1- डा. हजारी प्रसाद द् ववेदी –हिंदी साहित्य की भू मका ,पृ.सं. 38

2-डा. ए. के. मत्तल -मध्यकालीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास , साहित्य भवन पब्लिकेशन, पृ.सं.142

3- वही

4- एल. पी. शर्मा - मध्यकालीन भारत ,लक्ष्मीनारायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशन एवं वक्रेता पृ.सं. 4

5-बाबरनामा अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद,युगजीत नवलपुरी साहित्य अकादमी नवीन शाहदरा दिल्ली पृ.सं.419

6-चंद्रबली पाण्डे -मुगल बादशाहों की हिंदी क वता,नागरी प्रचारणी सभा ,काशी पृ.सं. 61

7-के. टी. शाह -द स्पलेंडर देट वाज इं डया, के संगर पब्लि शंग कंपनी ,पृ.सं. 30

8- आचार्य रामचंद्र शुक्ल - हिंदी साहित्य का इतिहास ,नागरी प्रचारिणी सभा ,काशी पृ.सं.159

9- वही पृ.सं. 119

10-शीरी मूसवी (सम्पादक) - अकबर के जीवन की कुछ घटनाएं,नेशनल बुक ट्रस्ट पृ.सं. 92